एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 05, अंक: 01 (जनवरी-फरवरी, 2025)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

मुर्गी पालन से आर्थिक समृद्धि की ओर

(*कमलेश कुमार यादव, डॉ. सुभाष चंद्र यादव एवं डॉ. विकास आर्य)
कृषि विज्ञान केंद्र, अलवर-1, राजस्थान
*संवादी लेखक का ईमेल पता: smw591129@gmail.com

भारत में कृषि क्षेत्र की गतिशील प्रकृति युवा शक्ति की सक्रिय भागीदारी की मांग करती है। उचित अवसर मिलने पर उनकी रचनात्मकता और ऊर्जा वर्तमान कृषि परिदृश्य को महत्वपूर्ण रूप से सुधार सकती है। युवा वर्ग कृषि क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं जिससे खाद्य सुरक्षा, पोषण की पूर्ति और आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित की जा सकती है। कृषि को आधुनिक और विविधीकृत करना इन मांगों को पूरा करने के लिए आवश्यक है। कई युवा किसान उन्नत क्षेत्रों में कदम रख रहे हैं। युवाओं की लचीलापन और अनुकूलन क्षमता उन्हें कृषि में चुनौतियों और जोखिमों का सामना करने के लिए बेहतर रूप से सक्षम बनाती है। कृषि में युवाओं को आकर्षित करना और बनाए रखना कृषि क्षेत्र की स्थिरता और विकास के लिए महत्वपूर्ण है। जनसंख्या वृद्धि होने और युवाओं में कृषि में रुचि कम होने के कारण यह अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है कि ऐसी रणनीतियाँ और अवसर विकसित किए जाएं जो युवा पीढ़ी को आकर्षित करें। युवा किसी भी देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और कृषि के भविष्य के लिए एक आधार और आशा के रूप में उनका योगदान होता है। उनकी ऊर्जा, नवाचार दृष्टिकोण और उत्साह उन्हें आधुनिक कृषि तकनीकों को अपनाने और लागू करने में सक्षम बनाते है।

ARYA परियोजना

कृषि विकास में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका को ध्यान में रखते हुए, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने युवाओ को कृषि की और आकर्षित करना और बनाये रखना **(आर्या)** कार्यक्रम की शुरुआत की है। यह 35 वर्ष से कम आयु के ग्रामीण युवाओं को कृषि और संबंधित उद्यमों के लिए सतत आजीविका प्राप्त करने के लिए प्रेरित करने पर केंद्रित है। कृषि के वर्तमान परिदृश्य को बदलने में युवाओं की भूमिका हमेशा महत्वपूर्ण रही है। 18 से 35 वर्ष आयु वर्ग के युवाओं को ARYA कार्यक्रम में शामिल किया गया है।

ARYA परियोजना के तहत एक सफल उद्यमी की कहानी जो मुर्गी पालन से जुड़ा हुआ है, श्री करण सिंह की है, जो कृषि विज्ञान केंद्र अलवर I के तहत ARYA परियोजना के लाभार्थी हैं और जिन्होंने मुर्गी पालन को एक सफल उद्यम में बदल दिया।

प्रशिक्षु की पृष्ठभूमि

श्री राजेंद्र कुमार दौलतपुर ब्लॉक, अलवर जिले के +2 पास युवा किसान हैं जिनके पास 3 एकड़ ज़मीन है। वे पारंपरिक फसलें जैसे गेहूं, जौ और सरसों उगाते थे। उनके क्षेत्र में पानी की कमी के कारण खेत से आय बहुत कम थी। वे सीमित आय में अपनी पारिवारिक जरूरतों को पूरा करने में कठिनाइयों का सामना करते थे। वह प्रशिक्षण से पहले एक

साल से ब्रोइलर मुर्गी पालन कर रहे थे लेकिन उन्हें चूजों की मृत्यु दर और वजन कम होने जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था, क्योंकि उन्हें वैज्ञानिक तरीकों जैसे ब्रीडिंग, टीकाकरण और फ़ीड प्रबंधन के बारे में पर्याप्त जानकारी नहीं थी। इसलिए वे अपने खुद के बनाए हुए मुर्गी पालन इकाई से ज्यादा लाभ प्राप्त नहीं कर पा रहे थे।

KVK हस्तक्षेप

KVK, नवगांव अलवर ने 2020-21 में मुर्गी पालन पर उद्यमिता स्थापित करने के लिए कुल 20 युवा उम्मीदवारों की पहचान की। श्री राजेंद्र कुमार ने 2020 में ARYA परियोजना के तहत KVK, नवगांव, अलवर I में वैज्ञानिक मुर्गी पालन पर प्रशिक्षण लिया। श्री राजेंद्र कुमार ने प्रशिक्षण से पहले ही अपनी मुर्गी पालन इकाई स्थापित कर ली थी। उस समय मुर्गी पालन के प्रबंधन के बारे में ज्ञान की कमी के कारण चूजों की मृत्यु दर अधिक थी और चूजे कम वजन के थे, जिससे बाजार मूल्य भी कम प्राप्त होता था। वैज्ञानिक मुर्गी पालन पर प्रशिक्षण उनके मुर्गीपालन से सम्बंधित ज्ञान में वृद्धि करने के उद्देस्य से आयोजित किया गया था, ताकि वह अपने स्वयं के इकाई के विकास में इसे लागू कर सकें। इस प्रशिक्षण में उन्होंने मुर्गी के शेड, बीमारी और टीकाकरण के प्रबंधन, सर्दी व गर्मी के मौसम में तापमान नियंत्रण तथा शेड की साफ़ सफाई के बारे में प्रशिक्षण दिया गया।

प्रशिक्षण का प्रभाव

प्रशिक्षण के बाद उन्होंने चूजों का सही तरीके से प्रबंधन किया तथा आवश्यक्ता पड़ने पर kvk के वैज्ञानिको से मार्गदर्शन प्राप्त किया। विभिन्न पहलुओं के बारे में जानकारी प्राप्त करने के बाद चूजों की मृत्यु दर कम हो गई और चूजे बाजार योग्य वजन तक पहुँचने लगे। जब भी आवश्यक हुआ चूजों के स्वास्थ्य प्रबंधन के लिए समय समय पर मार्गदर्शन प्राप्त करते रहे।

प्रारंभिक वर्षों में चूजों को वाणिज्यिक मुर्गी दाना खिलाते थे बाद में मुर्गीपालन में लागत कम करने के लिए स्वयं से तैयार दाना भी खिलाने लगे क्योकि मुर्गीपालन में मुर्गियों को दिया जाने वाला दाना ही सबसे महंगा होता है जिससे लागत को कम किया जा सके। समय के साथ उन्होंने इकाई का आकार बढ़ाया और अब वे प्रति बैच औसतन 4500 से 5000 मुर्गी पालन कर रहे हैं और प्रति वर्ष 7 बैच उत्पादन कर रहे हैं। उन्हें समय समय समय पर kvk नवगांव के पशु विज्ञान वैज्ञानिकों से सभी वैज्ञानिक और तकनीकी मार्गदर्शन मिल रहा है। वर्तमान में उन्होंने शेड में आधुनिक जल आपूर्ति प्रणाली स्थापित की है जिससे चूजों को 24 घंटे पानी मिलता है और वे अपनी आवश्यकता अनुसार इसका उपयोग कर सकते हैं। उन्होंने गर्मी के मौसम में तापमान को नियंत्रित करने के लिए एक नया पैड कूलिंग सिस्टम भी स्थापित किया है,जिससे गर्मी के दिनों में चूजे अच्छे से जीवित रहते हैं। अपने इकाई के संचालन को सुचारू रूप से चलाने के लिए उन्होंने "सुमन कमल प्राइवेट लिमिटेड" नामक एक कंपनी के साथ समझौता किया है, जिससे वे चूजों को 35 रुपये प्रति चूजे के हिसाब से खरीदते हैं और मुर्गी फ़ीड भी प्राप्त करते हैं। वे चूजों को पांच से छह सप्ताह बाद जब वे 2 से 2.5 किलो वजन के होते हैं तो कंपनी को बाजार दर पर बेच देते हैं।

श्री राजेंद्र कुमार मुर्गी पालन से प्रति वर्ष 5 से 6 लाख रुपये की आय अर्जित कर रहे हैं। वह मुर्गी पालन से अच्छी आय प्राप्त कर रहे हैं और अपनी आवश्यकताओं को पूरा कर रहे हैं। वह ग्रामीण युवाओं को कृषि में नवाचार अपनाने के लिए प्रेरित भी करते हैं।

निष्कर्ष

यह सफलता की कहानी उन लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत है जो कृषि के क्षेत्र में नवाचार अपनाना चाहते है। यह दर्शाता है कि सही दृष्टिकोण, प्रतिबद्धता और प्रयास से एक साधारण विचार को लाभकारी और सतत व्यवसाय में बदल सकते हैं। मुर्गी पालन का भविष्य अनंत संभावनाओं से भरा हुआ है और यह सफलता की कहानी भविष्य में आने वाली कई और सफलता की कहानियों की शुरुआत है।.